POLITICAL SCIENCE Dept.
B.A. III (Hons.), Paper-V

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur

सम्प्रेषण की प्रकृति (Nature of Communication)

सम्प्रेषण की प्रकृति का वर्णन निम्नलिखित है —

① सम्प्रेषण द्विमार्गी प्रक्रिया है। इसमें विचारों और तथ्यों का पारस्परिक आदान-प्रदान पाया जाता है। यह प्रक्रिया तभी पूर्ण होती है जबकि सन्देश देने वाले को सन्देश प्राप्त करने वालों ने समझ लिया हो और इस बात की सूचना उसने सन्देश देने वाले को दे दी हो।

② सम्प्रेषण सहयोगी प्रक्रिया है जिसमें दो या अधिक व्यक्ति पाए जाते हैं।

③ सम्प्रेषण एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इसके अन्तर्गत प्रबन्धक और अधीनस्थों को सदैव ही पारस्परिक सम्पर्क में रहना आवश्यक है।

④ यह संगठन में सर्वव्यापी है अर्थात सभी स्तरों पर व्याप्त रहती है। यह ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर और समस्तर पर विद्यमान रहती है।

⑤ सम्प्रेषण प्रक्रिया एक वृत्ताकार प्रक्रिया मानी जाती है जैसा कि हम देखते हैं कि इस प्रक्रिया में प्रत्येक संचार की कुछ न कुछ प्रतिक्रिया होती है।